फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

व्हाट्सएप के जरिये भी अपनी बातें हम तक पहुँचा कर चर्चा का दायरा बढायें। मजदूर समाचार फोन पर पायें और अपने ग्रुपों में भेज कर आदान-प्रदान बढायें। हमारे इस नम्बर पर व्हाट्सएप मैसेज भेजें : 9643246782

नई सीरीज नम्बर 371 **मई 2019**

सामुहिक सफलता

एक मैसेज आया है। थोड़ा सुनो। जब से गर्मी बढी है, फैक्ट्री में गर्मी बढ गई है। फैक्ट्री के अन्दर के झगड़े फैक्ट्री के बाहर भी जारी। परमानेन्ट मजदूर और सुपरवाइजर की टेम्परेरी वरकर द्वारा साथियों के साथ पिटाई। पुलिस। परमानेन्ट वरकरों में सहमति कि टेम्परेरी वरकर द्वारा काम से मना करने पर दबाव नहीं डालेंगे। परसों मैनेजिंग डायरेक्टर द्वारा स्टाफ से : ''एकदम से नौकरी से निकालना ठीक नहीं है। निकालने से पहले पन्द्रह दिन का समय दो ताकि दूसरी जगह काम ढूँढ सकें।'' जबकि अब तक रात दो बजे भी फैक्ट्री से बाहर करने का चलन रहा है।

अरे यह तो संक्षेप में आज के माहौल का एक अद्भुत वर्णन है। काम करवाने के इर्द-गिर्द तापमान के उतार-चढाव की पकड़ है।

हम सब में काम करवाने के तापमान में उतार-चढाव का अहसास तो आ ही जाता है। लेकिन एक वर्णन कर पाना ध्यान केन्द्रित कर पाने की माँग करता है।

एक तरह से यह मैसेज हम सब की एक सामुहिक सफलता है।

सामुहिक सफलता माने ?

कितने लोग हैं इस मैसेज में। कितना कोलाहल है। कितना टकराव है। कितने निर्णय हैं। कितने बदलाव हैं। इसी को ही हम सामुहिक बोल सकते हैं। और सफलता इसलिये बोला कि इसमें जो आत्मविश्वास है वह बहुत लोगों को ले कर बना है।

यह जो तीखे निर्णय लेना। यह जो तत्काल निर्णय लेना। यह नई पीढी की खूबी लगती है। शायद समय की समझ बदल चुकी है। शायद संस्थाओं के, संगठनों के बन्धन बहुत ढीले पड़ रहे हैं।

मेरे पड़ोसी एक पुराने बीमा एजेन्ट के साथ काम करते हैं। वो हँस कर कह रहे थे कि आजकल के युवा केवल पाँच-छह साल का जीवन बीमा माँगते हैं। कहते हैं आगे किसने देखा। पहले लोग पच्चीस-तीस साल की बीमा पॉलिसी सुन लेते थे।

यह मैसेज एक और ढँग से भी रोचक है। मुझे हमारी फैक्ट्री में 2011 और 2012 की बातें याद दिलाता है। दबाव और समय पर बहस और टकराव। यह बहुत तीखे ढँग से समझ आया था जब हम ने मैनेजमेन्ट का कब्जा हटा कर दस दिन फैक्ट्री में एक-दूसरे को सुना था और देखा था।

तो आप यह कह रहे हो कि इन दस साल में यह बहस और टकराव नये रूप ले चुके हैं तथा सामान्य ढँग से आम बातचीत में आ चुके हैं।

हाँ। हर जगह बातचीतों में टुकड़ों में इस तापमान के उतार-चढाव की छवि झलकती है। इस फैक्ट्री में यह हुआ। उस फैक्ट्री में वह हुआ। इस इलाके में, उस इलाके में, इस शहर में, उस प्रान्त में यह-वह होने का फैलाव बातचीतों के माहौल में पाओगे।

आपने जो बातचीतों का माहौल बोला है यह बहुत सटीक है। मैं जिस सामुहिक सफलता की बात कर रही थी वो मैसेज इस गाढापन से निकला है।

असंगत बन गये हैं कानून

✶**समृद्धि अल्युमिनियम** (बघौला-देवली रोड़, पलवल) फैक्ट्री में कन्टेनरों में आते कबाड़ से प्रतिदिन 65-70 टन अल्युमिनियम की सिल्लीयाँ मुख्यतः मारुति सुजुकी कम्पनी के लिये तैयार की जाती हैं। ताम्बा, जिन्क, मैग्नेशियम आदि अलग से एकत्र किये जाते हैं। पाँच एकड़ में स्थित फैक्ट्री में 300 से ज्यादा मजदूर। प्रोडक्शन में भट्टी पर 80-90 मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, साप्ताहिक अवकाश नहीं। लोडिंग-अनलोडिंग में 60-70 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में। कबाड़ की छँटाई में 150 महिला मजदूर दिन की साढे नौ और साढे दस घण्टे की शिफ्ट में, रविवार को साढे आठ घण्टे काम। ओवर टाइम के पैसे सब मजदूरों को सिंगल रेट से और गड़बड़ी कर इन में से पाँच सौ-हजार रुपये हर महीने खा भी जाते हैं। भट्टी पर काम करते वरकरों की तनखा 8850 से 11000 रुपये। कबाड़ की छँटाई आदि करते मजदूरों की तनखा 7000-7500 रुपये जबकि हरियाणा सरकार द्वारा अकुशल श्रमिक के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन 8827 रुपये है। ई एस आई तथा पी एफ एक तिहाई से कम की हैं जबकि कानून अनुसार सब वरकरों की होनी चाहियें। एक रात 2018 में भट्टी में बीस-पच्चीस घमाके हुये थे, हल्के थे, रफा-दफा। दिवाली 2018 के दिन तीन-चार टन वजन का भट्टी का गेट टूट कर मजदूर पर गिरा। दिल्ली में सरकारी अस्पताल ले गये। एक हाथ और एक पैर बेकार हो गये। निकाल दिया। स्टाफ के 60 लोगों को चेक द्वारा पेमेन्ट, पुरानी 15-20 महिला मजदूरों की तनखा बैंक में, बाकी सब वरकरों को नगद पैसे। फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है। कम्पनी की दूसरी फैक्ट्री गुजरात में मारुति सुजुकी फैक्ट्री के नजदीक है।

✶ **मारुति फैशन** (बी-138 ओखला फेज-1, दिल्ली) फैक्ट्री में 25 इम्ब्राइड्री वरकरों की ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। हैल्पर की तनखा 8500 रुपये जबकि दिल्ली में निर्धारित न्यूनतम 14000 रुपये है। ऑपरेटर की तनखा 9400 रुपये जबकि निर्धारित न्यूनतम 16962 रुपये है।

✶प्राइम ग्रुप की **पी सी आई लिमिटेड** (287-88 उद्योग विहार फेज - 2, गुड़गाँव) मुख्यालय में ठेकेदार कम्पनी के जरिये 15 हाउसकीपिंग वरकर रखे गये हैं। इन मजदूरों को ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से।

✶**बोनी पोलीमर्स** (37 पी सैक्टर-6, फरीदाबाद) फैक्ट्री में 9 अप्रैल से परमानेन्ट मजदूरों का ले ऑफ और ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे वरकरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी।

✶**एल आई एल** (91 बी सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर) नया नाम है। पहले लुमैक्स नाम था। नया नाम और नई मैनेजमेन्ट 10 अप्रैल से है। जापानी मैनेजमेन्ट कहते हैं। रविवार को ड्युटी के लिये जबरन बुलाना जारी है। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की जारी हैं। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से की बजाय सिंगल रेट से जारी है।

✶**अनसुन मल्टीटेक** (बी-123 ओखला फेज-1, दिल्ली) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। रविवार की छुट्टी। ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 150 वरकरों में दस-बारह की ही ई एस आई तथा पी एफ हैं। इन 150 मजदूरों को प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 26 दिन के 9000 रुपये, मतलब तनखा 4500 रुपये। कम्पनी रोल पर 200 मजदूर हैं जिन्हें ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर, रोज 12 घण्टे ड्युटी पर 26 दिन के 13-14-15-16-17 हजार रुपये, मतलब तनखा 7-8-9 हजार रुपये। कम्पनी 150 को स्टाफ कहती है परन्तु इनमें अधिकतर मजदूर हैं और इन्हें प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 26 दिन के 16-17-18 हजार रुपये। कम्पनी रोल पर जो वरकर हैं वो मार्च- आरम्भ में एच आर वालों के पास गये। मार्च की तनखा में उनके 400-500 रुपये बढाये।

✶**ए एस के ऑटोमोटिव** (28 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कमः कम्पनी रोल पर को 40 रुपये प्रति घण्टा, ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे को 36 रुपये प्रति घण्टा। पे-स्लिप देते हैं परन्तु उसमें ओवर टाइम के घण्टे नहीं दिखाते, सिर्फ राशि लिखी होती है।

✶**ए आई एम आई एल** (नाइमैक्स हाउस, ए-8 मोहन कोऑपरेटिव इन्डस्ट्रीयल एस्टेट, दिल्ली) फैक्ट्री में 200 वरकर निर्माणों की जाँच-परख वाली मशीनें असेम्बल करते हैं। सुप्रीम कोर्ट के आदेश से 1 नवम्बर 2018 से दिल्ली में न्यूनतम वेतन हैं : 1) अकुशल श्रमिक 14000 रुपये ; 2) अर्ध-कुशल श्रमिक 15,400 रुपये ; 3) कुशल श्रमिक 16,962 रुपये। लेकिन ए आई एम आई एल कम्पनी तो डिप्लोमा किये वरकरों को भी दस हजार रुपये तनखा देती रही है — मार्च 2019 की तनखा भी 10,000 रुपये। फैक्ट्री में ओवर टाइम होता है, फुल नाइट भी काम होता है लेकिन कम्पनी ओवर टाइम दिखाती नहीं। नगद पेमेन्ट। मैनेजमेन्ट ओवर टाइम का भुगतान बेसिक के डेढ गुणा की दर से बताती है और डिप्लोमा किये वरकरों की बेसिक पाँच हजार रुपये के आसपास है। इधर अप्रैल की तनखा डिप्लोमा किये मजदूरों को 14 हजार रुपये दी है — ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर 12539 रुपये। वरकरों के पी एफ के पैसे ए आई एम आई एल कम्पनी अपने ट्रस्ट में जमा करती है। कम्पनी की बड़ी मैनुफैक्चरिंग यूनिट नोएडा एस ई जैड में है।

✶ स्वयं को सबसे तेज इन्टरनेशनल कूरियर कहने वाली **डी एच एल कूरियर** कम्पनी दिल्ली में वरकरों को 9700 रुपये वेतन दे रही है।

सुरक्षाकर्मी

✶बघौला-देवली रोड़, पलवल स्थित **समृद्धि अल्युमिनियम** फैक्ट्री पर नोएडा में कार्यालय वाली **ओमैक्स सेक्युरिटी** के सुरक्षाकर्मी ड्युटी करते थे। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। साप्ताहिक अवकाश नहीं। दिन में 4 गार्ड और एक सुपरवाइजर। रात को 3 गार्ड, 2 गनमैन, एक सुपरवाइजर। ई एस आई तथा पी एफ की राशि काट कर, प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के गनमैन को 14 हजार रुपये और रविवार की दिहाड़ी, लेकिन एक छुट्टी करने पर दो दिहाड़ी काटना। सुपरवाइजर को ऐसे ही 12 हजार रुपये और गार्ड को 9500 रुपये। रात की ड्युटी के लिये 26 फरवरी को ओमैक्स सेक्युरिटी के वरकर फैक्ट्री पहुँचे तो समृद्धि मैनेजमेन्ट ने उन्हें ड्युटी पर नहीं रखा, दो अन्य सेक्युरिटी कम्पनियों के गार्ड लगा लिये। फरवरी में की ड्युटी के पैसे के लिये सुरक्षाकर्मी 1 मार्च को जनरल मैनेजर से मिले तो साहब बोला कि उसका इससे कोई लेना-देना नहीं है, ओमैक्स सेक्युरिटी जाने। और ओमैक्स सेक्युरिटी कम्पनी बोली कि समृद्धि कम्पनी ने पेमेन्ट नहीं की है, हम कहाँ से दें। सुरक्षाकर्मियों ने 26 मार्च को श्रम विभाग पलवल में शिकायत की। तीन और 22 अप्रैल की तारीख के बाद लेबर इन्सपैक्टर बोला : ''वकील करो। केस लड़ो। हम कुछ नहीं कर सकते।''

✶**एस एल वी सेक्युरिटी** कम्पनी ने उद्योग विहार गुड़गाँव में 400 से अधिक गार्ड सप्लाई किये हैं। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। साप्ताहिक अवकाश नहीं। ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर गार्ड को 12 घण्टे प्रतिदिन ड्युटी पर 30-31 दिन के 12500-13500 रुपये।

✶**ए एस एस सेक्युरिटी** द्वारा सप्लाई गार्डों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। साप्ताहिक अवकाश नहीं। कुछ गार्डों की ई एस आई तथा पी एफ हैं और कुछ की नहीं हैं। महीने में हर रोज 12 घण्टे ड्युटी पर गार्ड को 9500 रुपये।

और बातें यह भी

✶**प्रधान मन्त्री कौशल विकास योजना** के तहत आई एम टी मानेसर में एक फैक्ट्री में कार्य करते वरकर के कुछ प्रश्न : उत्पादन कार्य करते हैं, चोट लगने का खतरा रहता है, ई एस आई क्यों नहीं है ? दो वर्ष फैक्ट्री में काम करेंगे, पी एफ क्यों नहीं है ? प्रोडक्शन करते हैं तो फिर सिर्फ वृत्ति-वजीफा-स्टाइपेन्ड ही क्यों ? योजना में दो वर्ष फैक्ट्री में रहने का है, बीच में ही क्यों निकाल देते हैं ?

(बाकी पेज तीन पर)

मैनेजमेन्ट

आई एम टी मानेसर में प्लॉट 12 सैक्टर-5 स्थित **वीएक्सेस** फैक्ट्री मजदूरों की बातों में उभरती मैनेजमेन्ट की एक झलक :

●मैनेजर: ''आपके घर में कोई मर रहा है इससे हमें कोई मतलब नहीं है। हमारी मशीन पर काम बन्द नहीं होना चाहिये। फैक्ट्री में घर की टैन्शन भूल जाओ। जब तक कम्पनी छुट्टी नहीं देती तब तक आप फैक्ट्री में रहेंगे। जो मैं कहुँ वह सुनो। सिर्फ हाँ में जवाब दो।''

●फैक्ट्री में एक-दूसरे से बात करने पर प्रतिबन्ध है। सजा है। शिफ्ट बदल देना। ओवर टाइम में से दो घण्टे काटना।

●एच आर वाले मशीन चलाते ऑपरेटर की तलाशी लेते हैं। मोबाइल मिलने पर तनखा से 100 रुपये कम्पनी काट लेती है।

●पानी-पेशाब के लिये हस्ताक्षर। लौटते समय : आप इतनी देर बाथरूम में क्या कर रही थी ?

●सुबह 8 से साँय 5 बजे के 9 घण्टे को 8 घण्टे ड्युटी कहते हैं। आधा घण्टा लन्च का और आधा घण्टा टी-ब्रेक का काटते हैं।

●शिफ्ट सुबह 8 से है परन्तु कभी 9 बजे तो कभी 10 बजे बुलाते हैं। लन्च का टाइम बदल देते हैं। फैक्ट्री में काम नहीं उस दिन छुट्टी। उस छुट्टी के बदले में मैनेजमेन्ट ओवर टाइम के घण्टे काट लेती है।

●साँय 5 बजे के बाद के समय को ओवर टाइम कहते हैं परन्तु उस समय का भुगतान भी सिंगल रेट से करते हैं। छोटी-छोटी बात पर ओवर टाइम के घण्टे काट लेते हैं।

●तबीयत खराब होने पर गेट पास नहीं।

●कूलर का, एसी का बिल मजदूर भरें तो लगा देंगे।

●कैन्टीन खोल देंगे। ओवर टाइम का पैसा नहीं माँगोगे तो कैन्टीन में भोजन देंगे।

●ऑडिट आने के समय : सब फोर्मेलिटी पूरी।

वीएक्सेस फैक्ट्री में 300 मजदूर मारुति सुजुकी और होण्डा वाहनों के पैरदान, कार सीट कवर बनाते हैं।

चालाक और क्रूर

आई एम टी मानेसर में प्लॉट 11 सैक्टर-3 स्थित **ब्रिजस्टोन ऑटोमोटिव प्रोडक्ट्स** फैक्ट्री में 10 पुरुष और एक महिला गार्ड तथा दो सेक्युरिटी सुपरवाइजर **टाइगर सेक्युरिटी** कम्पनी के जरिये रखे हैं। इस-उस बात पर गार्ड को निकाल देते हैं और तब पैसों के लिये गार्ड को फरीदाबाद में टाइगर सेक्युरिटी कार्यालय जा कर इस्तीफा देने की कहते हैं। वहाँ रिजाइन देने पर एक फोन नम्बर दे देते हैं और कहते है कि 25 तारीख को पता कर लेना, पैसे बैंक खाते में भेज देंगे। गार्ड के खाते में पैसे नहीं भेजते हैं। ब्रिजस्टोन फैक्ट्री पर ड्युटी कर रहा गार्ड गाँव गया और लौटने पर ड्युटी पर नहीं रखा। गार्ड ने 15 जनवरी को फरीदाबाद जा कर टाइगर सेक्युरिटी ऑफिस में इस्तीफा दिया तो बोले कि पैसे भेज देंगे, 25 जनवरी को इस नम्बर पर पता कर लेना। नहीं भेजे और 25 जनवरी को फोन पर बोले कि भेज देंगे, 25 फरवरी को पता का लेना। नहीं भेजे और 25 फरवरी को बोले कि भेज देंगे, 25 मार्च को पता कर लेना। नहीं भेजे और 25 मार्च को फोन पर बोले कि तुम्हारा रिजाइन लैटर खो गया, फरीदाबाद आ कर फिर इस्तीफा लिख दो। फिर रिजाइन लैटर देने पर बोले कि पैसे भेज देंगे, 25 अप्रैल को फोन कर लेना। पैसे नहीं भेजे.... ब्रिजस्टोन मैनेजमेन्ट से कहा तो एच आर वाले बोले कि टाइगर सेक्युरिटी पर केस कर दो। ब्रिजस्टोन कम्पनी ने फैक्ट्री में गार्ड टाइगर सेक्युरिटी के ही रखे हुये हैं। **(गार्ड हों, सफाईकर्मी हों, चाहे प्रोडक्शन वरकर : जिस फैक्ट्री में ड्युटी की है उसकी मैनेजमेन्ट देनदारी की जिम्मेदार होती है। ठेकेदार कम्पनी ने नहीं दिया, कम दिया, या भाग गई : जिस फैक्ट्री में ड्युटी की है उसकी मैनेजमेन्ट पर दबाव बनाना बनता है। ठेकेदार कम्पनी के पीछे भागना फालतू की परेशानी होती है।)**

✶**गार्ड :** हफ्ते में शिफ्ट बदलती है। रविवार को रात की 12 घण्टे ड्युटी की। नहाने गया था। अब (सोमवार सुबह) 12 घण्टे दिन की ड्युटी। रात को आराम करूँगा।

साझेदारी

✶आई एम टी मानेसर, उद्योग विहार गुड़गाँव, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, नोएडा, फरीदाबाद में मजदूर समाचार का वितरण हर महीने होता है।

✶ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान फुरसत से बातचीत मुश्किल रहती है। इसलिये मिलने-बातचीत के लिये पहले ही सूचना देने का सिलसिला आरम्भ किया है। चाहें तो अपनी बातें लिख कर ला सकते हैं, चाहें तो समय निकाल कर बात कर सकते हैं, चाहें तो दोनों कर सकते हैं।

— बुधवार, 29 मई को सुबह 6 बजे से साढे नौ तक आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 में बिजली सब-स्टेशन के पास मिलेंगे। खोह गाँव की तरफ से आई एम टी में प्रवेश करते ही यह स्थान है। जे एन एस फैक्ट्री पर कट वाला रोड़ वहाँ गया है।

— उद्योग विहार, गुड़गाँव में फेज -1 में पीर बाबा रोड़ पर वोडाफोन बिल्डिंग के पास मंगलवार, 28 मई को सुबह 7 से 10 बजे तक बातचीत के लिये रहेंगे। यह जगह पेड़ के नीचे चाय की दुकान के सामने है।

— वीरवार, 30 मई को सुबह 7 से 10 बजे तक चर्चा के लिये ओखला-सरिता विहार रेलवे क्रॉसिंग (साइडिंग) पर उपलब्ध रहेंगे।

✶ फरीदाबाद में मई में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। बाटा चौक से ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

फोन तथा व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782

ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

25 हजार

मजदूर समाचार के अप्रैल अंक की 25 हजार प्रतियाँ छपी। व्हाट्सएप और ईमेल द्वारा कई अन्य पाठक जुड़े हैं।

अप्रैल अंक की 25 हजार प्रतियाँ जो छपी हैं वो पाठकों द्वारा और पाठक निर्मित करने की प्रक्रिया के कारण हैं। पाठक अपनी प्रति के साथ पाँच-दस-बीस-पचास-सौ-पाँच सौ-दो हजार प्रतियाँ ले कर अपने संवादों के लिये माहौल की रचना कर रहे हैं।

सब को निमन्त्रण है।

सम्पर्क के लिये फोन और व्हाट्सएप नम्बर : 9643246782

और बातें यह भी.......(पेज दो का शेष)

✶**गौरव इन्टरनेशनल** (506 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव) फैक्ट्री में सुबह साढे नौ बजे 400 टेलर काम आरम्भ करते हैं। रोज रात 11-12 बजे तक जबरन रोकते हैं। महीने में दो दिन तो सुबह साढे नौ से अगली सुबह 6 बजे तक सिलाई करो, फुल नाइट। रोटी के लिये पैसे नहीं, ऋचा-गौरव समूह में फुडिंग है ही नहीं।

✶**बुटीक इन्टरनेशनल** (सी-45, 46 हौजरी कॉमपलैक्स, नोएडा फेज-2) फैक्ट्री में एच आर डायरेक्टर ने 27 अप्रैल को सूचना टाँगी कि चुनाव वाली आचार संहिता के कारण डी ए विलम्ब से आयेगा..... जबकि उत्तर प्रदेश सरकार ने 18 अप्रैल को महँगाई भत्ते की घोषणा कर दी थी।

✶**एस डी ऑटो इंजीनियरिंग वर्क्स** (104 सैक्टर-25, फरीदाबाद फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट ने 1 मई की छुट्टी की और बदले में रविवार, 5 मई को फैक्ट्री चलेगी।

✶**ऋचा ग्लोबल** (219 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में इधर काम कम है। मजदूरों को नौकरी से कम्पनी निकाल रही है लेकिन ऋचा मैनेजमेन्ट इस्तीफा वरकर से लिखवाती है : ''घरेलू काम पड़ जाने के कारण काम करने में असमर्थ हूँ। कृपया मेरा चुकता हिसाब दें।''

✶उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 1 अप्रैल 2019 से निर्धारित न्यूनतम वेतन

अकुशल श्रमिक...............8013 रुपये

अर्ध-कुशल श्रमिक..........8814 रुपये

कुशल श्रमिक.................9874 रुपये

तन और मन

✶तन में मन का निवास है। तन की मृत्यु के साथ मन समाप्त हो जाता है।

✶मन का गठन सामाजिक लगता है।

✶कुछ हजार वर्ष से मानव प्रजाति में मन की भूमिका अधिकाधिक प्रभुत्वकारी बन रही है। तन के अपने आवेग होते हैं परन्तु सामान्य तौर पर तन को मन हाँकता लगता है।

✶मन के आवेग सामाजिक गठन में परिवर्तनों से निकटता से जुड़े लगते हैं।

✶तन के उदय, जन्म के बाद तन की निश्चित मृत्यु द्वारा पीढी-दर-पीढी उत्पन्न मन के प्रश्न : " मैं कौन हूँ ? मेरे होने का अर्थ क्या है ?"

✶तन और मन संयुक्त हैं "मैं" में। तन के सन्दर्भ में "मैं" कोई जटिलता लिये नहीं लगता। जबकि मन के सन्दर्भ में "मैं" के "स्वयं मैं" के साथ जटिल सम्बन्ध लगते हैं।

✶तन के होने, तन की समृद्धि, तन की सुरक्षा के लिये तन के "अपने" और "पराये" सहज ही महत्वपूर्ण हैं।

✶मन के सन्दर्भ में "मेरे-अपने" और "अन्य-पराये" जटिल गुत्थी बनते हैं। सामाजिक गठन का विस्तार मन के "मैं-मेरे-अपने" को "हम-हमारे" के बड़े समूह और "अन्य-दूसरे-पराये" के बड़े समूहों की भूलभुलैया में ले जाता लगता है।

✶गतिशीलता के होते हुये भी विगत में कुछ सामाजिक गठन कई पीढी तक स्थिर-से लगते रहे हैं। और सामाजिक गठनों में भूचाल भी आते रहे हैं जिन्होंने स्थापनाओं-प्रस्थापनाओं-मान्यताओं में व्यापक परिवर्तन किये।

✶इससे स्थिर-सी परिस्थितियों में इस-उस मत में समाधान-सा पाये मन के प्रश्न सामाजिक भूचालों के कारण नये सिरे से उमड़ते-घुमड़ते रहे हैं।

✶" मेरे होने का अर्थ" जब-तब "हमारे होने का अर्थ" का रूप धारण कर विगत में अनेक ताण्डव भी कर चुका है।

✶इन पाँच सौ वर्ष के दौरान विश्व में मण्डी-मुद्रा के विस्तार और फिर मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन के प्रभुत्वकारी बनने ने अतुलनीय ताण्डवों को उत्पन्न किया। परन्तु इस दौरान "मेरे-अपने-हमारे" तथा "वे-दूसरे-पराये" के गठनों-विघटनों की प्रक्रिया अत्यन्त तीव्र रही है। मन के प्रश्न, प्रत्येक के मन के प्रश्न, प्रत्येक व्यक्ति में प्रत्येक दिन अनेक बार उल्टे-पुल्टे होने लगे हैं।

✶इन पचास वर्षों में विशेषकरके, पूरा धरातल तेजी से बदल रहा है। "मेरे-अपने-हमारे" तथा "दूसरे-अन्य-पराये" अधिकाधिक असंगत होते जा रहे हैं। मानव प्रजाति में "पराया कोई नहीं" की स्थिति तेजी से बनी है। ऐसे में बदहवासी में चमत्कारी आत्मघात भी हो रहे हैं। परन्तु उभर रही प्रवृति "वैश्विक मैं" की, "वैश्विक हम" की लगती है। मन के प्रश्न : "मेरे होने का अर्थ क्या है-हमारे होने का अर्थ क्या है" आज " हम सात अरब लोगों के होने का अर्थ क्या है ?" में परिवर्तित हो रहे हैं।

✶अधिकाधिक डगमग मण्डी-मुद्रा, ऊँच-नीच, मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन वाला सामाजिक गठन अपने बने रहने में पृथ्वी पर जीवन को अधिकाधिक दाँव पर लगा रहा है। वायु, जल, मिट्टी का प्रदूषण इस सामाजिक गठन की प्रक्रिया में सामान्य है। चिन्ता और डर का बढना, आदर और प्रेम का कम होना निहित हैं मण्डी-मुद्रा के बने रहने में।

✶तन वैश्विक और मन वैश्विक तो जो नया उभर रहा है उसके अंकुर लगते हैं। युवाओं में मन की उड़ानें बन्धनहीन होने को प्रयासरत लगती हैं। मानव प्रजाति, जीवन, पृथ्वी, उपग्रह, ग्रह, तारा, तारामण्डल आज प्रस्थान-बिन्दू लगते हैं। मेरे होने का अर्थ, हमारे होने का अर्थ लगता है कि मैं के हम बनने, जीव प्रजातियों के पृथ्वी से एकाकार होने की राह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का एक अंश होने में देखना है। मैं-हम एकमेव हैं तथा ब्रह्माण्ड से एकमय हैं। Unique and Together.

फूँक मारने पर तिनके

✶**ग्रोवरसन्स** (135 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 8 प्रैसमैन पीस रेट पर काम करते थे। कम्पनी द्वारा रेट नहीं बढाने पर वरकर छोड़ते गये, 3 प्रैसमैन ही रह गये। सोमवार, 8 अप्रैल को प्रैसमैन ड्युटी आये। काम शुरू नहीं किया। रेट बढाओ, तब काम करेंगे। फैक्ट्री में बैठ कर गये। मंगलवार को भी प्रैसमैन फैक्ट्री में बैठ कर गये। बुधवार, 10 अप्रैल को फैक्ट्री गेट पर ही जनरल मैनेजर बोला : रेट नहीं बढायेंगे, करना है तो करो। तीनों प्रैसमैन फैक्ट्री गेट से ही वापस चले गये। और 11 अप्रैल को प्रैसमैन फैक्ट्री पहुँचे ही नहीं। ग्रोवरसन्स मैनेजमेन्ट ने 12 अप्रैल को फोन करके प्रैसमैन बुलाये, रेट 6 रुपये प्रति पीस की जगह 10 रुपये प्रति पीस किया। फैक्ट्री में 300 से ज्यादा टेलर हैं।

ग्रोवरसन्स मैनेजमेन्ट ने 22 अप्रैल को फिनिशिंग विभाग वरकरों को ओवर टाइम कर रुकने को कहा। मजदूर नहीं रुके, साँय 6 बजे फैक्ट्री से निकल लिये।

इस बात को पाँच-छह महीने हो गये। एक महिला वरकर ने सैलरी स्लिप माँगी तो ग्रोवरसन्स मैनेजमेन्ट उसे बाहर करने लगी। एकत्र हो कर मजदूर बोले कि हमें भी गेट पास दो, सब बाहर जायेंगे। एच आर वाले बोले: किसी को नहीं निकाल रहे, जाओ काम करो। वह महिला मजदूर ग्रोवरसन्स फैक्ट्री में काम कर रही है।

✶**किरण उद्योग** (14 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में भट्ठी पर 7 वरकर दिन में और 7 रात को 12-12 घण्टे की शिफ्टों में काम करते हैं। भट्ठी वाले मजदूरों ने 22 अप्रैल को सुबह 8 बजे काम शुरू नहीं किया। रात और दिन वाले 14 मजदूर फैक्ट्री गेट के बाहर बैठ गये। मार्च की तनखा दोपहर बाद 3 बजे दी तब वरकरों ने फैक्ट्री में जा कर भट्ठी चालू की। होण्डा कम्पनी वाले 25 अप्रैल को फैक्ट्री में आये और भट्ठी पर काम करते मजदूरों से बात की, आश्वासन दिये। फैक्ट्री में 200 मजदूर हैं। जिन वरकरों ने 22 अप्रैल को काम बन्द नहीं किया था उन्हें मार्च की तनखा 30 अप्रैल तक नहीं दी गई थी।

✶**रूप ऑटो** (439-40 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में पे-स्लिप नहीं देते थे। पेमेन्ट में गडबड़ करते थे। इस वर्ष होली से पहले, फैक्ट्री में काम बन्द कर सब वरकर एच आर विभाग पर एकत्र हो गये। कम्पनी ने मार्च से पे-स्लिप देनी शुरू कर दी है।

✶**बेनोक्स लैदर फैक्ट्री** (19 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) की 2015 की बात है। फैक्ट्री में सुबह 9 बजे से साँय साढे छह बजे तक ड्युटी। साढे नौ घण्टे को कम्पनी आठ घण्टे कहती थी। गर्मी पड़नी शुरू हो गई थी। वरकरों ने फिर साढे नौ घण्टे पर एतराज किया तथा एक दिन सुबह 9 बजे मजदूर फैक्ट्री में गये और साढे दस बजे सब वरकर फैक्ट्री से बाहर आ गये। फैक्ट्री गेट पर हजार-बारह सौ मजदूर एकत्र। पुलिस। साँय 3 बजे तक क्षेत्र पुलिस की छावनी बना। मैनेजिंग डायरेक्टर ने घोषणा की: "45 मिनट छोड़ देंगे। ड्युटी सवा नौ बजे से छह बजे की रहेगी।"

(इस सन्दर्भ में बात 1987 की है। फरीदाबाद में फैक्ट्रियों में 8-8 घण्टे की शिफ्टें थी। आठ घण्टे में ही भोजन-चाय-पानी-पेशाब के लिये समय थे। कम्पनियों के अपने नियम, इन्डस्ट्रीयल इंजीनियरिंग नोर्म्स के अनुसार 8 घण्टे की ड्युटी में साढे छह घण्टे काम के हिसाब से उत्पादन निर्धारित होता था। लेकिन मजदूरों द्वारा लन्च-टी-पानी-पेशाब के लिये निर्धारित डेढ घण्टे की जगह दो-ढाई घण्टे समय लेना फैक्ट्रियों में सामान्य था। ऐसे में एस्कोर्ट्स यूनियन प्रधान ने तो 1987 में पर्चा छाप कर मजदूरों को धमकाया था, आठ घण्टे में साढे छह घण्टे काम कर मैनेजमेन्ट-यूनियन एग्रीमेन्ट के अनुसार उत्पादन बढाने का आदेश दिया था।

सन् 2000 के बाद तेजी से कम्पनियों ने आठ घण्टे को साढे आठ घण्टे कर दिया। कुछ कम्पनियों ने आठ घण्टे को पौने नौ, नौ, साढे नौ, दस घण्टे कर दिया। इन दस-पन्द्रह वर्ष के दौरान तो 12 घण्टे ड्युटी फैक्ट्रियों में सामान्य हो गई है। और, ओवर टाइम दिखाना नहीं तथा भुगतान सिंगल रेट से करना सामान्य हो गया है।)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया। **RN 42233**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।